पवित्र क़ुरआन की तिलावत की फज़ीलत

﴿ فضل قراءة القرآن الكريم ﴾

[हिन्दी – Hindi – هندي]

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2009 - 1430

islamhouse.com

﴿ فضل قراءة القرآن الكريم ﴾

« باللغة الهندية »

عطاء الرحمن ضياء الله

2009 - 1430

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दया शील अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने मन की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। अल्लाह की प्रशंसा और स्तुति के बाद :

पवित्र कुर्आन का पाठ करने की फ़ज़ीलत

कुर्आन करीम मानवता के लिए अंतिम ईशवाणी है, जिसे सर्व संसार के सृष्टा ने सर्व मानव जाति के मार्गदर्शन और कल्याण के लिए अपने अंतिम सन्देष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उन पर अल्लाह की दया और शान्ति हो) पर अवतरित किया।

कुर्आन करीम ही एकमात्र धार्मिक ग्रंथ है जो अपनी वास्तविक रूप में आज तक मौजूद है और परलोक तक मौजूद रहेगा, इस में किसी भी प्रकार से असत्य का समावेश नहीं हो सकता; क्योंकि इसका उतारने वाला अल्लाह ही इसका रक्षक है।

कुरआन करीम की विशेषतायें अनेक हैं जिनका उल्लेख स्वयं कुर्आन करीम ही में अनेक स्थानों पर मिलता है, उन्हीं में एक विशेषता यह है कि

कुर्आन करीम पिछली आसमानी पुस्तकों की पुष्टि करने वाला और उन का संरक्षक है, जैसाकि सूरतुल–माईदा (5:48) में इसका उल्ले है। तथा उन धार्मिक ग्रंथों के मानने वालों ने अपनी ओर से उनमें जो संशोधन और परिवर्तन कर लिये थे, उनका साक्षी है, जिसका उल्लेख कुर्आन के कई अध्यायों में किया गया है। (उदाहरण स्वरूप सूरतुन्निसा 4:46, और सूरतुल–माईदा 5:13, 5:41 देखिये।)

कुर्आन करीम अल्लाह तआला का एक सर्वदीय और सर्व कालिक चमतकार है जिसके समान एक अध्याय तो दूर की बात कुछ छंद ही पूरी मानवता एक साथ मिलकर भी प्रस्तुत नहीं कर सकती! कुर्आन करीम की यह चुनौती केवल मनुष्यों के साथ विशिष्ट नहीं है, बल्कि जिन्नात को भी सम्मिलित है। यह चुनौती निरंतर परलोक तक बाक़ी रहेगी। अल्लाह तआला ने इस चुनौती का उल्लेख करते हुये फरमाया :

﴿قُلْ لَئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا﴾ (سورة الإسراء:٨٨)

“यदि इंसान और जिन्नात मिल कर इस कुर्आन जैसी किताब लाना चाहें तो नहीं ला सकते, अगरचे वह आपस में एक दूसरे की सहायता करें।” (सूरतुल–इस्रा :88)

कुर्आन की यह चुनौती धीरे–धीरे कुर्आन जैसी कुछ सूरतें (अध्याय) लाने की हो गई, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ﴾ (سورة هود:١٣)

"क्या ये लोग यह कहते हैं कि उस (मुहम्मद) ने इसे गढ़ लिया है? आप कह दीजिए कि तुम लोग उस जैसी दस सूरतें (अध्याय) ही गढ़ कर ले आओ और अल्लाह के अलावा जिसे चाहो अपनी सहायता के लिए बुला लो यदि तुम सच्चे हो।" (सूरत हूदः 13)

फिर इस चुनौती को कुर्आन जैसी एक सूरत ही लाने में परिवर्तित कर दी गई। अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَى عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِنْ مِثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ﴾ (سورة البقرة:٢٣)

"हम ने जो कुछ अपने बन्दे पर उतारा है अगर उसके विषय में तुम्हें शक है तो तुम लोग उस जैसी एक सूरत ही ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर अपने साझीदारें को बुला लो, यदि तुम सच्चे हो।" (सूरतुल बक़रा:23)

प्रिय मित्रो! कुर्आन करीम –जो मानव के लोक व परलोक के हितों पर आधारित है, जो सत्य और असत्य, मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता, भले और बुरे के बीच स्पष्ट रूप से अंतर करने वाला है– अल्लाह तआला की यह महान अनुकम्पा मानवता को जिस शुभ महीने में प्राप्त हुई, वह रमज़ान का मुबारक महीना है, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ﴾ (سورة البقرة:١٨٥)

"रमज़ान का महीना वह है जिस में कुर्आन उतारा गया, जो लोगों के लिए मार्गदर्शक है और जिसमें मार्गदर्शन की और सत्य तथा असत्य के बीच अन्तर की निशानियाँ हैं।" (सूरतुल–बक़रा:185)

यह हमारा सौभाग्य है कि इस समय हम उसी महीने में सांस ले रहे हैं जो कुर्आन का महीना है, अतः इस शुभ महीने में अन्य सत्कर्म के उपरान्त इस महान पुस्तक पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए, और याद रखें कि हमारे मुँह से निकलने वाली वाणियों में सर्वश्रेष्ठ वाणी और सब से उत्तम बात इसका पाठ करना (तिलावत) है।

कुर्आन करीम का पाठ करने, उसे सीखने और सिखाने, तथा पढ़ने और पढ़ाने की बहुत फ़ज़ीलत (प्रतिष्ठा और विशेषता) है, जिन में से कुछ का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है :

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَنْ تَبُورَ﴾ (سورة فاطر:٢٩)

"जो लोग अल्लाह की किताब का पाठ (तिलावत) करते हैं, और नमाज़ नियमित रूप (पाबन्दी) से पढ़ते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया हैं उस में से छिपे और खुले तौर पर खर्च करते हैं, वे ऐसे कारोबार के उम्मीदवार हैं जो कभी भी नुक्सान में न होगा।" (सूरत फातिर :29)

कुर्आन पढ़ने की फ़ज़ीलत (अज्र व सवाब) : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

« مَن قرأَ حرفا من كتابِ الله فَلَهُ بِهِ حسنة ، والحسنةُ بعشر أمثالِهَا ، لا أَقول : « الم» حرف ، ولكن « أَلف» حرف، و«لام» حرف ، و«ميم» حرف. » [أخرجه الترمذي وصححه الألباني]

‘‘जिस ने अल्लाह की किताब का एक अक्षर पढ़ा उस के लिए एक नेकी है, और एक नेकी दस गुना नेकियों के बराबर है। मैं नहीं कहता कि ‘**अलिफलाम्मीम**’ एक अक्षर है, किन्तु ‘**अलिफ**’ एक अक्षर है, ‘**लाम**’ एक अक्षर है और ‘**मीम**’ एक अक्षर है।’’ (तिर्मिज़ी, शैख अल्बानी ने इसे सहीह कहा है।)

कुर्आन सीखने और सिखाने की फ़ज़ीलत (सवाब) : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है :

((خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ)) [رواه البخاري]

‘‘तुम में सब से बेहतर वह है जो कुर्आन सीखे और सिखाए।’’ (बुख़ारी)

कुर्आन पढ़ने, उसे याद करने और तिलावत में महारत की फ़ज़ीलत : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

((مَثَلُ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَهُوَ حَافِظٌ لَهُ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ وَمَثَلُ الَّذِي يَقْرَأُ وَهُوَ يَتَعَاهَدُهُ وَهُوَ عَلَيْهِ شَدِيدٌ فَلَهُ أَجْرَانِ)) [رواه البخاري]

‘‘उस आदमी की मिसाल जो कुर्आन पढ़ता है और वह उसका हाफिज़ भी है, सम्मानित और नेक लिखने वाले (फरिश्तों) जैसी है, और जो आदमी कुर्आन बार–बार पढ़ता है और उसके पढ़ने में उसे कठिनाई होती है तो उसके लिए दो गुना सवाब है।’’ (सहीह बुख़ारी)

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

(يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ: اقْرَأْ وَارْتَقِ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِي الدُّنْيَا فَإِنَّ مَنْزِلَتَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَأُ بِهَا) [رواه الترمذي وقال حديث حسن صحيح]

“क़ुर्आन पढ़ने वाले से कहा जायेगा : क़ुर्आन पढ़ता जा और चढ़ता जा, और उसी तरह से ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि दुनिया में पढ़ा करता था, क्योंकि तेरा स्थान वहाँ है जहाँ तू अन्तिम आयत का पाठ करेगा।” (इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत करके हसन सहीह कहा है)

ख़त्ताबी रहिमहुल्लाह कहते हैं कि : असर में यह बात आई है कि : क़ुर्आन की आयतें जन्नत की सीढ़ियों के बराबर हैं, अतः क़ारी को कहा जाएगा : क़ुर्आन की जितनी आयतें तू पढ़ता है उसी के बराबर सीढ़ियों पर चढ़ता जा, तो जो पूरा क़ुर्आन पढ़ लेगा वह आख़िरत में जन्नत की सब से ऊँची सीढ़ी पर पहुँच जाएगा, और जो कुछ हिस्सा पढ़ेगा वह उसी के बराबर सीढ़ियों पर चढ़ेगा, तो सवाब की सीमा वह होगी जहाँ उसकी क़िराअत का अन्त होगा।

उस व्यक्ति की प्रतिष्ठा जिसके बच्चे ने क़ुर्आन की शिक्षा प्राप्त कीः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है :

((من قرأ القرآن وتعلمه وعمل به، ألبس والداه يوم القيامة تاجا من نور ضوءه مثل ضوء الشمس، ويكسى والداه حلتين لا يقوم بهما الدنيا، فيقولان: بم كسينا؟ فيقال : بأخذ ولدكما القرآن)) [رواه الحاكم وقال صحيح على شرط مسلم وحسنه الألباني في صحيح الترغيب]

“जिसने क़ुर्आन पढ़ा, उसे सीखा और उसके अनुसार अमल किया तो उसके माता–पिता को क़ियामत के दिन नूर का ताज पहनाया जायेगा, जिसका प्रकाश सूरज के प्रकाश के समान होगा, तथा उसके माता–पिता को दो ऐसा जोड़ा पहनाया जायेगा जिनकी बराबरी संसार भी नहीं कर

सकती। इस पर वे दोनों पूछेंगे : यह हमें किस कारण पहनाया गया है? तो जवाब दिया जायेगाः तुम दोनों के बच्चे के क़ुर्आन सीखने के कारण।" (इसे हाकिम ने रिवायत किया है और मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है, तथा अल्बानी ने सहीहुत्तरगीब में इसे हसन लि–गैरिही कहा है।)

आख़िरत में क़ुर्आन पढ़ने वालों के लिए क़ुर्आन की शिफ़ाअत : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

((اقْرَءُوا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ يَأْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيعًا لِأَصْحَابِهِ)) [رواه مسلم]

"क़ुर्आन पढ़ा करो, इसलिए कि वह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वाले के लिए सिफ़ारिशी बन कर आयेगा।" (सहीह मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

((الصيام والقرآن يشفعان للعبد يوم القيامة يقول الصيام: أي رب منعته الطعام والشهوة فشفعني فيه، ويقول القرآن: منعته النوم بالليل فشفعني فيه، فيشفعان)) [رواه أحمد، والطبراني في الكبير، والحاكم، وصححه الألباني في صحيح الجامع رقم:٣٨٨٢]

"रोज़ा और क़ुर्आन बन्दे के लिए क़ियामत के दिन सिफ़ारिश करेंगे। रोज़ा कहेगा : ऐ रब! मैं ने इसे खाने और शह्वत (कामवासना) से रोक दिया, अतः इसके बारे में मेरी सिफारिश स्वीकार कर, तथा क़ुर्आन कहेगाः मैं ने इसे रात को सोने से रोक दिया, अतः इसके बारे में मेरी सिफारिश स्वीकार कर। चुनाँचि उन दोनों की सिफारिश स्वीकार की जायेगी।" (इस हदीस को अहमद, तब्रानी –मो'जमुल कबीर में– और ह़ाकिम ने रिवायत किया है, और अल्बानी ने सहीहुल जामिअ् हदीस संख्याः 3882 में सहीह कहा है।)

कुर्आन पढ़ने और सीखने के लिए एकत्र होने का सवाब : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है :

((وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ إِلاَّ نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلاَئِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ)) [رواه مسلم]

"जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर में एकत्र होकर अल्लाह की किताब का पाठ (तिलावत) करते हैं, और आपस में उसका अध्ययन और पठन–पाठन करते हैं तो उन पर (अल्लाह की ओर) से शान्ति उतरती है, और रहमत उन्हें ढांप लेती है, और फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने पास मौजूद फ़रिश्तों में उनका चर्चा करता है।" (मुस्लिम)

कुर्आन की तिलावत के आदाब : इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह ने कई एक आदाब बताए हैं जिन में से कुछ का चर्चा यहाँ किया जा रहा है :

1– कुर्आन पढ़ने वाला व्यक्ति पाकी के बिना न तो कुर्आन छुए और न पढ़े।

2– तिलावत करने से पहले मिस्वाक करे।

3– अच्छा कपड़ा पहने।

4– का'बा की ओर चेहरा करे।

5– जम्हाई आने लगे तो कुर्आन पढ़ने से रुक जाए।

6– तिलावत करते समय बिना ज़रूरत बात न करे।

7– ध्यान के साथ पढ़े।

8– वादे (अज्र व सवाब) की आयतों पर ठहर कर अल्लाह से उसका प्रश्न करे और सज़ा वाली आयतों के पास उस से पनाह चाहे।

9– क़ुर्आन खुला हुवा न छोड़े और न ही उस पर कोई चीज़ रखे।

10– तिलावत करते समय पाठक एक दूसरे पर अपनी आवाज़ ऊँची न करें।

11– बाज़ार, शोर और हल्ला वाली जगह पर क़ुर्आन की तिलावत न करे।

क़ुर्आन की तिलावत कैसे की जाए : अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तिलावत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया : आप तिलावत करते समय अपनी आवाज़ को खींचा करते थे, जब आप بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الـرَّحِيمِ (बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम) पढ़ते तो بِسْمِ اللهِ (बिस्मिल्लाह) के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, الـرَّحْمَنِ (अर्रहमान) के साथ अपनी आवाज़ को खींचते, और الـرَّحِيمِ (अर्रहीम) के साथ अपनी आवाज़ को खींचते थे।

तिलावत के अज्र व सवाब का कई गुना बढ़ना : जो व्यक्ति भी इख़्लास के साथ क़ुर्आन पढ़ता है, वह अज्र व सवाब का हक़दार है, लेकिन उसका यह सवाब उस समय कई गुना बढ़ जाता है जब वह दिल को हाज़िर करके, ध्यान देकर और समझ कर पढ़ता है, चुनाँचि हर अक्षर के बदले एक से लेकर सात सौ गुना तक नेकी मिलती है।

दिन और रात में क़ुर्आन की तिलावत की मात्रा : सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हर दिन क़ुर्आन करीम की तिलावत के लिए एक हिस्सा निर्धारित कर रखा था, और उनमें से किसी ने सात दिन से पहले क़ुर्आन

ख़तम करने की पाबन्दी नहीं की, बल्कि तीन दिन से कम में क़ुर्आन ख़तम करने से रोका गया है, जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा को तीन रातों से कम में क़ुर्आन खतम करने से रोकते हुये फरमाया : जिसने तीन दिन से कम में क़ुर्आन पढ़ा, उसने उसे नहीं समझा।

इसलिए मेरे सम्मानित भाईयो! आप अपना समय क़ुर्आन की तिलावत में बिताने के लालायित बनें और आप अपने लिए हर दिन क़ुर्आन की तिलावत के लिए एक मात्रा निर्धारित कर लें जिसे किसी भी हालत में न छोड़ें, क्योंकि निरंतरता के साथ किया जाने वाला थोड़ा ही अमल नागा करके किये जाने वाले ढेर सारे अमल से बेहतर है। यदि आप गाफिल हो जायें और ध्यान से निकल जाये या सो जायें, तो उसे दूसरे दिन पढ़ कर उसकी छतिपूर्ति कर लें, पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है:

« مَنْ نَامَ عَنْ حِزْبِهِ أَوْ عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ فَقَرَأَهُ فِيمَا بَيْنَ صَلاَةِ الْفَجْرِ وَصَلاَةِ الظُّهْرِ كُتِبَ لَهُ كَأَنَّمَا قَرَأَهُ مِنَ اللَّيْلِ ». [رواه مسلم]

"जो आदमी अपने हिज़्ब (अथार्त् दैनिक तिलावत की निर्धारित मात्रा) या उसके कुछ भाग को बिना पढ़े सो गया, फिर उसे फ़ज्र और ज़ुह्र की नमाज़ के बीच पढ़ लिया, तो वह उसके लिए ऐसे ही लिखा जायेगा गोया उसने उसे रात के हिस्से में ही पढ़ा है।" (सहीह मुस्लिम)

तथा आप उन लोगों में से न हो जाएं जिन्हों ने क़ुर्आन को छोड़ दिया और उसे भुला दिया, चाहे इसका छोड़ना किसी भी प्रकार का क्यों न हो, जैसेकि इसकी तिलावत करना, या तरतील के साथ (ठहर ठहर कर)

पढ़ना, या ध्यान और मननचिंतन के साथ पढ़ना, या उसके अनुसार अमल करना, या उस के माध्यम से शिफ़ा (स्वास्थ्य) मांगना त्याग कर देना।

अल्लाह तआला से हमारी प्रार्थना है कि हमें दिन रात क़ुर्आन की तिलावन करने, उसे समझने, उसके अनुसार कार्य करने और उसमें मननचिंतन करने का सौभाग्य प्रदान करे और इस क़ुर्आन को परलोक में हमारे लिए सिफारिश करने वाला और साक्षी बनाये हमारे विरूद्ध साक्षी न बनाये। और हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह तआला की दया और शान्ति अवतरित हो।